वर्तमान युवा पीढ़ी एवं मूल्यः एक विश्लेषण

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 16.06.2021

डॉ. रश्मि पंत
एसोसिएट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग
एम.बी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ,हल्द्वानी
ईमेलः pantrashmii@yahoo.com

सारांश

जीवन के लक्ष्यों एवं नैतिकता का धर्म, संस्कृति एवं मूल्यों से निकट का सम्बन्ध है।मूल्य मानव जीवन की सार्थकता है , उनका धर्म एवं अस्तित्व है। मूल्यों का ज्ञान एवं आचरण हमारे लिये आवश्यक है । मूल्यों का केवल ज्ञान ही पर्याप्त नही है बल्कि उन्हें आचरण में लाना महत्वपूर्ण है मूल्य जीवन के अन्तिम लक्ष्य होते है इसलिये शिक्षा मूल्यपरक होनी आवश्यक है। किसी भी संस्कृति में समाज के विश्वासों, व्यवहारों तथा मूल्यों का मेल होता है और इनसे ही मूल्यों का बोध होता है। भारतवर्ष में शिक्षा का उद्देश्य न तो केवल वैयक्तिक है और ना ही सामाजिक। हमारी संस्कृति में व्यक्ति एवं समाज को एक दूसरे का पूरक माना है। मूल्य मनुष्य के सामाजिक जीवन के अनुरूप स्थिर तथा सुसंगत तरीके से उसके आधारभूत आवेगों एवं इच्छाओं का संगठन एवं संतुष्टि करके, मनुष्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मूल्यों की व्यवस्था मानव अस्तित्व के विभिन्न आयामों में व्यक्ति के अनुकूलन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन करती है। वर्तमान समाज में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों में विघटन आने का प्रमुख कारण नई पीढ़ी की आधुनिकता सम्बन्धी गलत व भ्रामक अवधारणा है। प्राचीन नैतिक मूल्यों की अवहेलना, अविश्वास, स्वयं के प्रति अनास्था आदि यही आज आधुनिकता का पर्याय बन गये है।

*प्रस्तुत लेख **में युवा पीढ़ी**में मूल्यों की आवश्यकता एवं सुझावों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।*

***मुख्य शब्दः** शिक्षा के मूल्य, नैतिकता, आध्यात्मिकता, सहिष्णुता।*

प्रस्तावना

मूल्य समाज में विभिन्न आदर्शों प्रतिमानों के रूप में समाज को उचित दिशा निर्देशन प्रदान करते हैं। मनुष्य के जीवन में मूल्यों का व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण में अत्यन्त महत्व होता है। मूल्य शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा से होता है, जिसमें मूल्यों पर बल दिया जाता है और इसके अन्तर्गत ऐसी प्रणाली का संगठन किया जाता है जो शिक्षा के सभी अंग जैसे– शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम, शिक्षक व अभिभावक सभी मूल्यों का संवर्द्धन करने में तत्पर हो।जीवन को हम जिस अर्थ के सन्दर्भ में समझने का प्रयास करते है उस अर्थ को सामान्य रुप से मूल्य कहा जाता है। मूल्य मानव जीवन की सार्थकता है , उनका धर्म एवं अस्तित्व है। मूल्यों का ज्ञान एवं आचरण हमारे लिये आवश्यक है । मूल्यों का केवल ज्ञान ही पर्याप्त नही है बल्कि उन्हें आचरण में लाना महत्वपूर्ण है

जे. सी. स्टेनली के अनुसार

मूल्य एक प्रकार का मानक या मान्यता है। ये भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक हो सकते है और सभी चरित्र निमार्ण में सहायक होते है। चरित्र निमार्ण में मूल्य शिक्षा की भूमिका भी पाई जाती है। यह शिक्षा औपचारिक हो सकती है जो विद्यालयों में विषयों के अध्यापन के साथ दी जा सकती है अथवा अनौपचारिक हो सकती है जो दैनिक जीवन के क्रियाकलापों के रुप में प्रदान की जा सकती है।

मूल्य शिक्षा घर से प्रारम्भ होती है एवं विद्यालय में शिक्षकों के प्रोत्साहन से जा रह सकती है। विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षकों के नेतृत्व में शैक्षिक गतिविधियों के साथ–साथ मूल्य शिक्षा को भी सीख सकते हैं। परन्तु वर्तमान समय में शिक्षकों को इस ओर ध्यान देने की अत्यन्त आवश्यकता है। मूल्यों की शिक्षा के लिए विद्यालय एक वास्तविक शक्ति है। जब परिवार एवं विद्यालय दोनों साझेदारी से कार्य करते हैं तो विद्यार्थी के मूल्यों के विकास में सकारात्मकता निश्चित ही दिखाई देती है।

भारत विश्व में एकमात्र ऐसा देश है, जिसने जीवन मल्यों को नैतिकता का पाठ भी पढ़ाया। भारतीय संस्कृति में पुरखों द्वारा मिली नैतिकता और उच्च आदर्श हमारे देश की पहचान है।मूल्यों की शिक्षा प्रक्रिया ज्ञान से आरम्भ होती है फिर उस ज्ञान से सम्बन्धित भावनाओं एवं संवेदनाओं को विकसित किया जाता है तत्पश्चात् यह प्रयास किया जाता है कि उसको आचरण में लाया जाये, तभी यह प्रक्रिया पूर्ण होती है । मानव मूल्य एवं एक ऐसा सदगुण समूह है, जिसे अपने संस्कारों एवं पर्यावरण के माध्यम से अपनाकर मनुष्य अपनं निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है और अपना व्यक्तित्व विकास करता है ं ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अन्तः करण द्वारा नियन्त्रित होते है तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परपंरा द्वारा परिपोषित होते है।

भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था गुरूकुल शिक्षा प्रणाली पर आधारित थी। जिसमें बाल्यकाल से ही विद्यार्थियों को बगैर धर्म, वर्ग, भाषा के भेदभाव से सभी शिक्षा प्राप्त करते थे। इससे उनमें समानता, एकता, एवं भाईचारे की भावना उत्पन्न होती थी परन्तु जैसे–जैसे हम गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था से दूर हाते गये हमारा नैतिक पतन होता गया। गुरूकुल शिक्षा व्यवस्था मनुष्य को जीने की कला सिखाती थी, उन्हें ज्ञानवान, विवकेशील के साथ ही सभ्य समाज को निर्मित करने के गुण विकसित किये जाते थे। वर्तमान शिक्षा पद्धति में भारतीय सम्यता, संस्कृति आदि का अभाव होने के कारण हम भारतीय मूल्यों को नही समझ पा रहे है।

वर्तमान में यह एक स्वीकृत तथ्य है कि हमाने मूल्यों के विघटन के लिये आधुनिकता बहुत हद तक उत्तरदायी है इसके अनेकों कारण है आधुनिक ज्ञान विज्ञान ने औद्योगिकरण को जन्म दिया है, तीव्र संचार माध्यम के कारण स्थानों की दूरियां मिट गई है। दूरस्थ व्यक्तियों के बीच वाह्य संवाद सुगम हो गया है। इस कारण समाज में सहयोग, निष्ठा, संबन्ध जैसे मूल्यों का ह्रास हुवा है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर गौर करें तो यह प्रश्न उठता है कि क्या पाठ्यक्रम के द्वारा मूल्यांकन सम्भव है ? यह शिक्षा केवल पाठ्यक्रम से नही दी जा सकती अपितु तब सम्भव हो पायेगी, जब विद्यार्थियों को विविध क्रियाकलापों के माध्यम से कक्षा एवं कक्षा के बाहर संवेदनशीलता, त्याग, निष्ठा, परोपकार, आत्मसंयम आदि मूल्यों को आत्मसात करने के अवसर दिये

कार्य इस हेतु विभिन्न गतिविधियों के लिये विद्यालय के साथ–साथ घर एवं समाज जब एक साथ शिक्षा के दायित्व को निभायें तभी यह शिक्षा सहज ढंग से दी जा सकती है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता

मानवीयता का विकास

जब शिक्षा मूल्यों पर आधारित होती है तो वह व्यक्ति को आत्मविकास एवं सामुदायिक विकास के लिए तैयार करती है। जब व्यक्ति में मानव कल्याण की भावना होती है तो वह समाज में उचित स्थान एवं सम्मान प्राप्त करता है।

नैतिकता का विकास

आज युवा पीढ़ी में नम्रता, बड़ों का आदर, सहिष्णुता, सेवा की भावना आदि गुणों का अभाव है। यदि शिक्षा मूल्यों पर आधारित होगी तो इन गुणों के विकास में सहायक होगी।

सकारात्मक सामाजिक प्रवृत्तियों का विकास

मूल्य शिक्षा के आधार पर युवाओं को समाज में व्याप्त बुराईयों से अवगत कराया जा सकता है। उन्हें दहेज प्रथा, भ्रष्टाचार, आतंक एवं तानाशाही जैसी बुराईयों को बताकर सकारात्मक सोच विकसित की जा सकती है, जिससे समाज को सुधारने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

समग्र विकास

वर्तमान पाठ्यक्रमों में मूल्य शिक्षा को नहीं रखा गया है, जिससे जीवन से सम्बन्धित सूक्ष्म बातों को विद्यार्थी नहीं सीख पाते हैं। युवा पीढ़ी के समग्र विकास के लिए पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को सम्मिलित किया जाना वर्तमान समय में अनिवार्य होना चाहिए।

मूल्य शिक्षा के उद्देश्य

मूल्य शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य है

1) व्यक्ति के आचरण में सुधार लाना।
2) छात्रों में सहयोग, प्रेम, करूणा, अहिंसा, समानता आदि गुणों का विकास करना।
3) छात्रों में अनैतिकता की परख की सामर्थ्य का विकास करना।
4) भौतिकवादी एवं आध्यात्मवादि संस्कृति में समन्वय स्थापित करना।
5) छात्रों को राष्ट्रीय लक्ष्यों– समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता आदि का बोध कराना।

वर्तमान समय में मूल्य आधारित शिक्षा की बेहद आवश्यकता है क्योंकि समाज विघटन की ओर अग्रसर है और भारत में सर्वाधिक जनसंख्या युवा पीढ़ी की है, अगर इस पीढ़ी को प्रारम्भ से ही उचित मूल्य आधारित शिक्षा शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा प्रदान की जाए तो आने वाला कल वर्तमान से बेहतर हो सकता है।

आज युवा पीढ़ी हर क्षेत्र में प्रगति कर रही है और रोजगार के भी बेहतर साधन प्राप्त कर लिए हैं, बहुत सारी पुस्तकों का भी ज्ञान है परन्तु कमी है तो संस्कारों की और मूल्यों की। संवेदनशीलता, आदर, लगाव आदि। इन सभी का स्थान युवा पीढ़ी में विलुप्त होता जा रहा है।आज हम मशीन हो चुके हैं। परन्तु मनुष्यता बहुत पीछे छूट गई है। हमारे पास भौतिक समृद्धि तो अपार है, परन्तु संस्कृति, मूल्य, सम्बन्धों की जड़े खोखली होती जा रही है।

सुकरात के अनुसार

*"ज्ञान ही सद्गुण है" अर्थात् यदि उचित मूल्यों की जानकारी बालकों को दे दी जाये तो निःसंदेह बालकों में सद्गुण आ जायेगा।*उनके अनुसार, मूल्यों की शिक्षा देकर व्यक्ति को उत्तम बनाया जा सकता है।

बर्कोविट्ज एवं बीयर (2007) के अनुसा र

चरित्र शिक्षा "सिर" (ज्ञान, सोच), 'दिल' (भावना, प्रेरणा) और 'हाथ' (व्यवहार, कौशल) के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है।

शिक्षा के मूल्यों में परिवार एवं विद्यालय ये दोनों ही प्रभावी होते हैं। चाहे कोई भी मूल्य हो उसे घर एवं विद्यालय दोनों जगह लागू होना चाहिए वरना छात्र भ्रमित हो जाता है कि क्या गलत है और क्या सही।अगर हम बात करें 'चरित्र' की तो परिवार एक बच्चे के चरित्र का पहला एवं महत्वपूर्ण प्रभाव है। इसके बाद शिक्षक विद्यालय घर में दी जा रही मूल्य शिक्षा को मजबूत बनाने का कार्य करता है। बच्चे के सर्वप्रथम शिक्षक उसके माता–पिता होते हैं। अगर अभिभावक एवं विद्यालय दोनों साझेदारी से कार्य करेंगें तभी चरित्र शिक्षा प्रभावी होगी।

परन्तु वर्तमान परिदृश्य में इन मूल्यों का पतन निरन्तर हो रहा है और हमारे आदर्श या नैतिक मूल्यों से युवा वर्ग निरन्तर दूर होता जा रहा है। मानवीय संवेदनाएँ निरन्तर समाप्त होने की कगार पर है। इस देश में करीब464 मिलियन .युवा है जो आने वाले समय में इस राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करेगें परन्तु वह तो पाश्चात्य संस्कृति की दौड़ में लगें है।

आज के युवाओं को "आदर्श", "उद्देश्य" एवं 'सिद्धान्त' किसी का भी ज्ञान नहीं है और इन सबके चलते समाज निरन्तर पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। नैतिक मूल्य सही और गलत एवं बुरे के मानदंडों को परिभाषित करते हैं। नैतिक मूल्य हमें जीवन में उद्देश्य की ओर अग्रसर करते हैं। अगर हम अच्छे नैतिक मूल्यों को धारण करते हैं तो हम वास्तविकता में जमीन पर उतर जाते हैं और अपने आस–पास के लोगों की देखभाल करना, दूसरों को कष्ट ना देना, ये अच्छे नैतिक मूल्यों के उदाहरण हैं। वर्तमान शिक्षा में नैतिक मूल्यों की अत्यन्त आवश्यकता है। भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार आत्मा ज्ञान रूप है और ज्ञान आत्मा का प्रकाश है।

चारित्रिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल देते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था **"शिक्षा मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता का विकास है, वह शिक्षा जो जन समुदाय को जीवन संग्राम के उपयुक्त नहीं बना सकती, जो उनकी चारित्रिक शक्ति का विकास नहीं कर सकती, जो उनके मन में परहित भावना और सिंह के समान साहस पैदा नहीं कर सकती, क्या उसे हम शिक्षा का नाम दे सकते हैं?**

युवा पीढ़ी में मूल्यों के विकास हेतु सुझाव

1. वर्तमान में युवा पीढ़ी को नैतिक मूल्यों की ओर प्रेरित करने की आवश्यकता है।
2. युवा पीढ़ी को प्राचीन संस्कृति के साथ–साथ उनमें नैतिक, सामाजिक एवं अध्यात्मिक मूल्यों की ओर प्रेरित करने की आवश्यकता।
3. साथ ही सेवा भावना मूल्यों को भी बताने की आवश्यकता।
4. केन्द्र एवं राज्य सरकारों को युवा पीढ़ी हेतु व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता।
5. अभिभावकों के साथ–साथ शिक्षकों को छात्रों के अच्छे नैतिक मूल्यों के लिए प्रयास करने चाहिए।
6. विद्यालयों में अन्य विषयों की तरह नैतिक शिक्षा को पुनः सम्मिलित किया जाना आवश्यक।

7. विभिन्न महापुरूषों की जीवन गाथा और उनके संदेशों को प्रारम्भिक शिक्षा एवं शैक्षिक क्रियाकलापों में सम्मिलित किया जायें। ताकि उनसे विविध नैतिक मूल्यों को आत्मसात किया जा सके।
8. मूल्यों से सम्बन्धित भाषण, वादविवाद एकांकी आदि का आयोजन किया जायें।
9. मूल्यपरक शिक्षा को शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों तक पहुँचाने हेतु अपने कार्यों के प्रति निष्ठा एवं ईमानदारी होनी चाहिये। उन्हें अपने आचरण कार्यो, परिश्रम, सत्यपालन सदाचार आदि मूल्यों को विद्यार्थियों के समक्ष रखना चाहिये क्योंकि शिक्षकों के नैतिक आचरण एवं व्यक्तित्व का विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

अन्त में हमारे परंपरागत अथवा व्यवहारिक मूल्यों के अभिरक्षण एवं उनकी पुनः प्रतिष्ठा हेतु यह आवश्यक है कि हम अपनी कथनी और करनी में उचित समन्वय स्थापित करें। वर्तमान में आवश्यक है कि नैतिक, स्वाभिमानी, उद्यमी एवं रोजगारपरक मूल्यपरक शिक्षा प्रदान की जाये।

वर्तमान समय में शिक्षक को चाहिए कि सामाजिक परिवर्तन को देखते हुए उच्च शिक्षा में गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए केवल अक्षर एवं पुस्तक ज्ञान के माध्यम ना बनाकर शिक्षित को केवल भौतिक उत्पादन–वितरण का साधन ना बनाय जाये अपितु नैतिक मूल्यों से अनुप्राणित कर आत्मसंयय, प्रलोमनोपेक्षा, तथा नैतिक मूल्यों का केन्द्र बनाकर भारतीय समाज, अन्तराष्ट्रीय जगत की सुखशान्ति और समृद्धि को साधन तथा माध्यम बनाया जाय। ऐसी शिक्षा निश्चित ही 'स्वर्ग लोके च कामधुग् भर्वाता' कामधेनु बनकर सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाली और सुख समृद्धि तथा शान्ति का संचार करने वाली होगी।"

सन्दर्भ ग्रंथ

1. आर.ए.शर्मा : (2004) मानव मूल्य एवं शिक्षा, आर. लाल बुक डिपो मेरठ
2. डा.राम शंकर पाण्डेय (2010) मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
3. नत्थूलाल गुप्त (2010) मूल्यांपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली
4. http://m.face book.com/law article
5. www.wikipedia.com
6. Gandhi, K.K.(1993) Value Education "A study of Public Opinion". Giyan Publishing House, New Delhi
7. प्राचीन–अर्वाचील भारतीय शिक्षा–पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन–श्री नन्दनन्दनान्द सरस्वती, पृष्ठ 80
8. बर्कोबिट्ज, एम/डब्ल्यू/और बीयर, एम0सी0/(2007) चरित्र शिक्षा में क्या काम आता है। चरित्र शिक्षा में अनुसंधान के जर्नल, 5(1), 291।
9. यादव, उग्रसेन/और पाण्डे, सीमा/(2019) शिक्षा के महत्व और मूल्यों पर स्कूल और परिवार के सहयोग का अध्ययन/जर्नल ऑफ इमर्जिंग टैक्नोलॉजी एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, 6(5), 1591–1598।
10. शिक्षा की चुनौती A (1985) नीति संबंधी परिप्रेक्ष्य, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ।